केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च 2010
अंक – योजना हिंदी (ऐच्छिक)
कूटबंध 29/1/1
29/1/2
29/1/3

कक्षा – XII

सामान्य निर्देश :

1. अंक–योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक योजना में दिए गए उत्तर–बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न किंतु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

2. मूल्यांकन करने वाले परीक्षकों के साथ जब तक प्रथम दिन वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से अंक–योजना पर भली–भांति आद्योपांत विचार–विनिमय नहीं हो जाता, तब तक मूल्यांकन आरंभ न कराया जाए।

3. मूल्यांकन अपनी निजी व्याख्या के अनुसार न करके अंक–योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

4. प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दाईं ओर अंक दिए जाएं। बाद में उपभागों के इन अंकों का योग बाईं ओर के हाशिए में लिखाकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।

5. यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर बाईं ओर ही अंक देकर उन्हें गोलाकृत कर दिया जाए।

6. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का अतिरिक्त उत्तर भी लिख दिया है तो उस उत्तर पर अंक दिए जाएं जिसे पहले लिखा गया हो।

7. संक्षिप्त, किंतु उपयुक्त विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया बिंदुवत उत्तर विस्तृत विवेचन की अपेक्षा अच्छा माना जाएगा। ऐसे उत्तरों को उचित महत्व देने की उपेक्षा है।

8. बार–बार की गई एक ही प्रकार की अशुद्ध वर्तनी पर अंक न काटें।

9. अपठित गद्यांश और काव्यांश के प्रश्नों में परीक्षार्थियों की समझ, बोध–क्षमता और ग्रहणशीलता का परीक्षण किया जाता है, अतएव इनके उत्तरों में अभिव्यक्तिगत योग्यता को अधिक महत्व न दिया जाए जिससे परीक्षार्थियों को अकारण हानि हो।

10. मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने – 0 से 100 का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात् परीक्षार्थियों ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे शत–प्रतिशत अंक दिए जाएँ ।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च, 2010
अंक योजना हिंदी (ऐच्छिक)
कक्षा – XII

कूटबंध कूटबंध 29/1/1 (स्थानीय)
29/1/2
29/1/3

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गच्छ सं. 29/1/1	29/1/2	29/1/3	उत्तर संकेत/मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
1.	1 (क)	2 (क)	1 (क)	खंड – 'क'	15 अंक
				किसी भी जीव को अकारण दुख न पहुंचाना, उनके साथ सद्व्यवहार करना व उन्हें सुख पहुंचाना।	2
	(ख)	(ख)	(ख)	जिस जीवन–शैली में अहिंसा सर्वोपरि हो। संकल्पपूर्वक वध न करना, अकारण दुख व पीड़ा न पहुंचाना, सभी प्राणियों को मित्रवत् समझना ...आदि अनुकरणीय है।	2
	(ग)	(ग)	(ग)	जैनधर्म के प्रवर्त्तक भगवान महावीर जी ने 'जियो और जीने दो' की बात कही। जिसका तात्पर्य है – सुखपूर्वक जियो व दूसरों को भी प्रसन्नता व आराम से जीवन–यापन करने दो।	2
	(घ)	(घ)	(घ)	क्योंकि क्रोध हिंसा की भावना का आरंभिक रूप है। क्रोध में व्यक्ति दूसरे को शारीरिक आघात और मानसिक कष्ट देता है। द्वेष भी बदले की भावना को जन्म देता है।	2
	(ड.)	(ड.)	(ड.)	'क्षमा' चरित्र का, जीवन का उदात्त भाव है। यह हमारे परिवार से सामंजस्य कराने व पारस्परिक प्रेम को बढावा देने में अहम् भूमिका निभाता है। क्षमा कर देने से शत्रु भी मित्रवत् व्यवहार करते हैं।	2
	(च)	(च)	(च)	क्रोध से बुद्धि का नाश, विवेकहीन हो अनुचित कार्य करना, ऊंच–नीच, अच्छे–बुरे का ध्यान न रहना। क्रोध हिंसा की प्रवृत्ति का एक आरंभिक रूप है क्योंकि वह अकारण या कोध में दूसरों को पीड़ा पहुंचाने या मरने–मारने पर उतारू हो जाने की प्रवृत्ति होने के कारण क्रोध को हिंसा का आरंभिक रूप माना है।	2
	(छ)	(छ)	(छ)	'अन्' – उपसर्ग एक – प्रत्यय (½+½)	1
	(ज)	(ज)	(ज)	विशेषण : – उन्नतिशील/उन्नत क्षमाशील/क्षम्य (½+½)	1
	(झ)	(झ)	(झ)	'जीवन में अहिंसा का महत्व', 'अहिंसात्मक जीवन–शैली' या कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक।	1
2.	2 (क)	1 (क)	2 अथवा (क)	अपठित काव्यांश – प्रत्येक उत्तर के लिए एक अंक निर्धारित है। धरती पर किसी एक का अधिकार नहीं, यह सभी की है।	1×5=5 अंक
	(ख)	(ख)	(ख)	इस धरती पर सभी को सभी सुखों के उपभोग और निडर होकर जीने का अधिकार है।	
	(ग)	(ग)	(ग)	सभी को हवा, पानी, प्रकाश, अग्नि, आकाश और भूमि के उपयोग – उपभोग की स्वतंत्रता चाहिए।	
	(घ)	(घ)	(घ)	सुख–सुविधाओं के बंटवारे को लेकर मनुष्य–मनुष्य के बीच संघर्ष हो रहे हैं।	
	2 (ड.)	1 (ड.)	2 (ड.)	स्वार्थ और संकीर्ण भावना के कारण।	2

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
2. अथवा	2 अथवा (क)	1 अथवा (क)	2 (क)	झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई की बीरांगना होने के कारण ही उसे 'मर्दानी' कहा गया है।	
	(ख)	(ख)	(ख)	जिस प्रकार माला टूट जाने पर उसके मनके बिखर जाते हैं। इसी प्रकार रानी लक्ष्मीबाई भी विजयी होते–होते यहां शहीद हो गई।	
	(ग)	(ग)	(ग)	रानी लक्ष्मीबाई का महत्व उसके शहीद होने के बाद अधिक बढ़ गया क्योंकि अब वह स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा देती है।	
	(घ)	(घ)	(घ)	आखिरी सांस तक वह वह लड़ती रही उससे वीरांगना की भांति युद्ध किया और अंत में अपना जीवन दे दिया। (कविता की उपयुक्त पंक्ति उद्धृत करने पर भी अंक दें)	
	(ङ.)	(ङ.)	(ङ.)	'रानी की समाधि' देशकाल की सीमाओं के पार होकर युगों–युगों तक बलिदान व देश–प्रेम की प्रेरणा देती रहेगी।	
3	3	4	3	**खंड 'ख'** किसी एक विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबध – 1. भूमिका 1 2. विषयवस्तु का सुसंबद्ध प्रतिवादन 6 3. उपसंहार 1 4. भाषा–शुद्धता और अभिव्यक्ति कौशल 2	10 अंक
4.	4	3	4	पत्र–लेखन का अंक विभाजन : 1. पत्र का प्रारंभ और समापन की औपचारिकताएं ½+½ 2. प्रश्नानुसार विषयवस्तु 3 3. भाषाशुद्धता और प्रस्तुति 1	5 अंक
5.	5	–	–	i) मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। उसे आप धीरे–धीरे समझ कर और आराम से पढ़ सकते हैं। ii) आप उन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं। iii) यह लिखित भाषा का विस्तार है। लिखित भाषा में व्याकरण, वर्तनी, शब्दों की शुद्धता आदि का ध्यान रखना पड़ता है। iv) यह चिंतन, मनन व विश्लेषण का माध्यम है। v) लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।	5 अंक
	5 अथवा	–	–	**दूरदर्शन पर समाचार प्रस्तुत करते समय वाचक को कम से कम समय में कम शब्दों में ज़्यादा से ज़्यादा ख़बरें देनी होती हैं।** सावधानियां – • भाषा–शैली के स्तर पर • प्रचलित सरल शब्दावली • सरल और छोटे वाक्य • गैर–जरूरी विशेषणों अतिंरजित उपमाओं से बचना • स्पष्ट उच्चारण • सामग्री और विज़ुअस में तालमेल • कोई अन्य उपयुक्त बिंदु	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/2/2	29/3/3		
		5		1. इंटरनेट' पत्रकारिता की लोकप्रियता के कारण – खबरों, लेखों चर्चा–परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों के जरिए अपने समय की धड़कनों को महसूस करना। 2. इससे न केवल खबरों का सम्प्रेषण, पुष्टि और सत्यापन होता है बल्कि खबरों के बैकग्राउंडर तैयार करने में तत्काल सहायता मिलती है। दुष्परिणाम : सूचनाओं के आदान–प्रदान का यह बेहतरीन औज़ार अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी ज़रिया है।	
		5 अथवा		विशेष लेखन यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। उपयोगिता : विशेष लेखन के तहत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फ़ीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख–समीक्षा और स्तंभ लेखन भी आता है। सामान्यतः साहित्य से लेकर विज्ञान तक, कारोबार से लेकर खेल तक सभी विषयों की विस्तृत एवं विशिष्ट जानकारी पाठकों को उनकी अपनी–अपनी व्यापक रुचियों के आधार पर मिलती है।	
			6	प्रिंट, छपाई यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों से सबसे पुराना है। इसके अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि का समावेश होता है। लेखन के लिए योग्य बातें :– i) लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना। ii) समय–सीमा और आवंटित जगह के अनुशासन का पालन करना। iii) लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना। iv) सहज प्रवाह के लिए तारतम्य बनाए रखना।	
			6 अथवा	दूरदर्शन के माध्यम से समाचार पहुंचाने के लिए प्रयुक्त सोपान :– i) फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ ii) ड्राई एंकर iii) फ़ोन–इन iv) एंकर–विज़ुअल v) एंकर–बाइट vi) लाइव vii) एंकर–पैकेज़	
6.	6 (क)	6 (क)	5 (क)	पांचों प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में देने हैं :– वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।	5 अंक 1
	(ख)	(ख)	(ख)	उलटा पिरामिड–शैली में सबसे महत्वपूर्ण तथ्थ को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा जाता है।	1
	(ग)	(ग)	(ग)	फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, सुशिक्षित करना और मनोरंजन करना होता है।	1

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
	(घ)	(घ)	(घ)	स्तंभ–लेखन :– विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप स्तंभ लेखन है। इसमें कुछ मुहत्वपूर्ण लेखक अपनी रुचि व योग्यतानुसार अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। अखबार भी उन्हें उनकी लोकप्रियता देखकर एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं।	1
	(ड.)	(ड.)	(ड.)	लिखने का जिम्मा दे देते हैं। खोजी रिपोर्ट, इन–डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट में से कोई दो बताने हैं।	1
7				**खंड 'ग'** सप्रसंग व्याख्या – • संदर्भ कविता और कवि का नाम ½+½ • पूर्वापर प्रसंग 1 • व्याख्या बिंदुओं का स्पष्टीकरण 4 • शिल्पगत विशेषताएं 1 • भाषा–शुद्धता व अभिव्यक्ति कौशल 1	8 अंक
	7	अथवा	7	• कवित्त, घनानंद। • इस कवित्त में कवि अपनी प्रेयसी को उलाहना देता है। • व्याख्या बिंदु – – मिलन के लिए आनाकानी, परंतु आरसी में दर्शन कब तक करती रहोगी? – मेरी मूक पुकार तुम्हें बुलाती है। – कब तक कानों में रुई डाले रहोगी। – मेरी भी जिद्द है, आखिर कभी तो मेरी पुकार सुनोगी • विशेष – – कवि की प्रिय–मिलन की आकांक्षा व्यंजित हुई है। – नायिका सुजान की निष्ठुरता का स्वरूप। – अनुप्रास अलंकार। – 'कान में रुई डालना' मुहावरे का प्रयोग। – वियोग श्रृंगार रस। – कवित्त छंद।	
	7	अथवा	7	• 'बनारस', केदारनाथ सिंह। • बनारस के प्राकृतिक सौंदर्य व वैभव का वर्णन। • व्याख्या बिंदु – – बनारस में बसंत का आगमन। – श्रद्धालु जन दशाश्वमेध घाट पर आकर संवेदनशील हो उठते हैं। – घाट पर उपस्थित बंदरों की आंखें में नमी। – भिखारी खाली कटोरों में अन्नदाता से उम्मीद लगाए बैठे हैं। • विशेष – – शिवनगरी बनारस के घाट पर उमड़ती भीड़ का कलात्मक वर्णन। – देशज शब्द – सुगबुगाना। – 'खाली कटोरों में बसंत का उतरना' – लाक्षणिक प्रयोग। – मुक्त छंद।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
8.	8 (क)			(किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित) सागर का आशय समाज से और बूंद का व्यक्ति से है। बूंद के अस्तित्व का सागर में विलय होता है। बूंद क्षणिक है, नश्वर है, परंतु निरर्थक नहीं।	3+3=6 अंक
	(ख)			इस पद में प्रकृति की प्रफुल्लता देख वियोगिनी राधा नयन मूंद लेती है। उसे कृष्ण की स्मृति सालने लगती है। इसी प्रकार भ्रमर और कोयल की ध्वनि सुन कान ढक लेती है। दीन दृष्टि से प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा करती है। प्रिय मिलने की उत्कंठा है।	
	(ग)			ईमानदारी के कारण आज वह हाथ फैलाने को विवश है। भ्रष्ट आचरण से वह धनी हो जाता। आस्थावान, ईमानदार और संवेदनशील लोग यह सब नहीं कर सके अतः आज भी वे गरीब हैं।	
		8 (क)		दीप स्नेह अर्थात् तेल से भरा है अतः गर्वीला है। गर्व के कारण मदमस्त है और उसका मदमाता रूप सहज है। अन्य दीपों की पंक्ति में बैठाकर सम्रष्टि में विलय करना चाहता है।	
		(ख)		श्रावण मास में प्रियतम परदेश में हैं। जाते समय उसका मन हर कर ले गए। पत्र से वह अपने प्रियतम को अपनी मार्मिक स्थिति से परिचित करवाना चाहती है पर पत्र कैसे भेजे यह भी परेशानी है।	
		(ग)		कवि चाहकर भी ईमानदार और गरीब व्यक्तियों के लिए कुछ नहीं कर पाता। सबके प्रति सहानुभूमि अवश्य है पर उसे अपनी भूमिका नगण्य लगती है।	
			8 (क)	सत्य की पहचान दुष्कर। सत्य का स्थिर रूप, आकार और पहचान नहीं है। आत्मा की आंतरिक शक्ति को सत्य माना है। सत्य वस्तु, स्थिति, घटना, काल और पात्रों के अनुसार बदलता रहता है।	
			(ख)	वियोगिनी राधा कृष्ण को देख कर भी तृप्त नहीं है, मधुर आवाज सुनकर भी अतृप्त है। प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा में लीन हैं। प्रतिक्षण छीजती जा रही हैं।	
			(ग)	व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होते हुए भी अकेला है। समष्टि में विलय होने पर समाज का भला होता है। समाज और राष्ट्र मजबूत होता है।	
9.	9 (क)	9 (ख)	9 (क)	(किन्हीं दो का काव्य–सौंदर्य अपेक्षित) भाव और शिल्प सौंदर्य के दो–दो बिन्दुओं का उल्लेख पर्याय मानें। <u>भाव सौंदर्य</u> • प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण। • विभिन्न देशों से आए व्याकुल एवं विक्षुब्ध प्राणी भारत में अपार शांति का अनुभव करते हैं। • उषा रूपी पनिहारिन स्वर्ण कलश (सूर्य के रूप में) से सुखों की वर्षा करती है। • तारे अपनी मस्ती में ऊंघ रहे हैं।	3+3

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/2/2	29/3/3		
9.				शिल्प–सौंदर्य • मानवीकरण, रूपक अलंकार! • गेयता, माधुर्य एवं प्रसाद गुण! • तत्सम शब्दावली, खड़ी बोली! • लाक्षणिक प्रयोग।	
	(ख)	(ग)	(ख)	भाव सौंदर्य • पूस मास की सर्दी में विरहणी नागमती की वियोगजन्य पीड़ा का चित्रण। • रात लंबी और प्रियतम परदेश में। • विरह रूपी बाज की दृष्टि। • रक्त सूख गया, मास गल गया है केवल पंख शेष हैं, प्रियतमा का आग्रह कि प्रिय वही समेट लो। शिल्प–सौंदर्य • नागमती के विरह का मार्मिक चित्रण। • वियोग श्रृंगार का वर्णन। • रूपक, अतिशयोक्ति, अनुप्रास अलंकार। • अवधी भाषा। • चौपाई, दोहा छंद।	
	(ग)	(क)	(ग)	भाव–सौंदर्य • लाल बजरी पर गिरे पीले पत्तों की चरमराहट से वसंत आगमन की सूचना। • प्रातः कालीन हवा में जरा सी गर्माई – मानो, अभी–अभी गर्म पानी में नहाकर आई हो। • हवा गोलाकार रूप में फिरकी की तरह आई और चली गई। शिल्प–सौंदर्य • मानवीकरण, उपमा अलंकार! • देशज शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग। • खड़ी बोली!	
10.	10	12	–	गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या – i) पाठ का शीर्षक व लेखक का नाम ½+½ ii) पूर्वापर संबंध निर्वाह 1 iii) व्याख्या – मुख्य बिंदुओं की 3 iv) टिप्पणी / विशेष कथन / भाषा–शैली 1 जरा सी आहट ..... सब । i) पाठ – 'जहां कोई वापसी नहीं' ii) लेखक – निर्मल वर्मा iii) पूर्वापर संबंध निर्वाह – औद्योगिक विकास के दौर में प्राकृतिक सौंदर्य का नष्ट होना व लोगों का अपने परिवेश से उखड़ना।	6 अंक

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/2/2	29/3/3		
10				iv) व्याख्या बिंदु – • युवा हिरणियों ..... • कृषक महिलाओं का चौकना और फिर कार्य में संलग्न हो जाना। • वे न डरती हैं, न काम छोड़ भागती हैं। अपितु मुस्कुराती हैं। • यह दृश्य, इसकी मोहकता लेखक को आने वाले कल की चिंता – जब औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप सब मटियामेट हो जाएगा – में डाल देती है। v) भाषा काव्यात्मक – धान रोपती कृषक महिलाओं के चौंकने की स्थिति की तुलना वन्य हिरणियों से करना आदि।	
	अथवा	अथवा		i) पाठ – 'यथास्मै रोचते विश्वम्' लेखक – रामविलास शर्मा ii) आज के युग में साहित्यकार भी रचना–धर्मिता पर प्रकाश iii) व्याख्या बिंदु – श्री कृष्ण के पाञ्चजन्य शंख से साहित्य की तुलना करते हुए लेखक का कहना है कि साहित्यकारों और भाग्य के भरोसे रहने वाले निरुद्यमियों / आलसियों को संग्राम से जूझने की प्रेरणा देता है उनमें आत्मविश्वास जगाता है, उन्हें पुरुषार्थी बनाता है। iv) भाषा शैली – भाषा सहज, प्रभावी और मुहावरेदार है। तत्सम शब्दों का सहज प्रयोग है।	
			11 (क)	किन्हीं दो का उत्तर अपेक्षित। प्रत्येक उत्तर में दो बिंदु पर्याप्त – • गाड़ी पर सवार होने के बाद हर–गोविन्द को पुराने दिनों और पुराने संवादों की याद आने लगी। • बड़ी बहुरिया के संवाद का एक–एक शब्द उनके मन में चुभने लगा। • वह सोचने लगा कि संवाद सुनाते समय वह भी बडी बहुरिया की तरह रोएगा। • अपनी इस मनःस्थिति से छुटकारा पाने के लिए वह अपने बैठे हुए सहयात्री से बातचीत करने लगा ताकि उसका मन बदल जाए।	3+3=6 अंक
			11 (ख)	• कठिन और विषम परिस्थितियों में भी हंसकर जीना सीखों। • अपना प्राप्य हर हाल में वसूल करो। • दूसरों के द्वार पर भीख मांगने मत जाओ। • चाहे सुख हो या दुख, शान के साथ जिओ। • प्रिय–अप्रिय को उल्लासपूर्वक ग्रहण करो। **(कोई दो)** • उसे गाढ़े का साथी इसलिए कहा गया है कि वह विषम परिस्थितियों में भी फलता–फूलता है। • उसमें अपराजेय जीवनी शक्ति है। • वह स्वावलंबी है। उसमें असीम आत्मविश्वास है। **(कोई दो)**	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1 / 1	29 / 2 / 2	29 / 3 / 3		
			(ग)	• वह मन ही मन देवदास से प्रेम करने लगती है। • वह लाज से गुलाबी होते हुए प्रेम की अनुभूति को अभिव्यक्त करती है। • उसके मन में संभव के विषय में अनेक प्रश्न उठते हैं। वह उसका नाम भी जानना चाहती है। • अपने प्रेम को स्पष्टतः अभिव्यक्त नहीं कर पाती।	
11.	11 (क)	–	–	किन्हीं दो का उत्तर दो–दो बिंदुओं में अपेक्षित – – गाड़ी पर सवार होने के बाद हर–गोविन्द को पुराने दिनों और पुराने संवादों की याद आने लगी। – बड़ी बहुरिया के संवाद का एक–एक शब्द उनके मन में चुभने लगा। – वह सोचने लगा कि संवाद सुनाते समय वह भी बड़ी बहुरिया की तरह रोएगा। – अपनी इस मनःस्थिति से छुटकारा पाने के लिए वह अपने बैठे हुए सहयात्री से बातचीत करने लगा ताकि उसका मन बदल जाए।	4+4=8 अंक
	(ख)		11 (ख)	– विपरीत परिस्थितियों में भी हंसकर जीना सीखो। – प्रत्येक दशा में अपना लक्ष्य प्राप्त करके रहो। – दूसरों के द्वार पर भीख मांगने मत जाओ। – सुख–दुखमयी परिस्थितियों में भी हंस कर जीना सीखो। – अप्रिय को भी प्रिय के समान ही सहर्ष स्वीकार करो। – कुटज विपरीत दशाओं में भी पुष्पित और पल्लवित होता है। – वह अपराजेय जीवन–शक्ति, स्वावलंबन और आत्मविश्वास का प्रतीक है।	6
	(ग)		(ग)	– मंसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का निर्णय लेती है। – वह देवदास के साथ अपने–आप को मन से जोड़ लेती है। – वह लालच का अनुभव करते हुए भी अपने प्रेम को अभिव्यक्त करती है। – उसके चित्त में संभव के विषय में अनेक प्रश्न जन्म लेते हैं। – उसके नाम की जिज्ञासा उसके मन में प्रबल हो उठती है।	
	–	10 (क)	–	क) किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित i) लेखक ने यह वाक्य कौशांबी से लौटते समय एक पेड़ के सहारे रखी चतुर्भुज शिव की मूर्ति को देखकर कहा। ii) इस मूर्ति को देखकर लेखक का जी ललचा गया। उसने इधर–उधर देखा और चुपचाप उस मूर्ति को इक्के पर रखवा लिया। iii) लेखक को अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही था क्योंकि लेखक को संग्रहालय के लिए उस मूर्ति की आवश्यकता थी।	4+4 = 8 अंक
	–	(ख)	–	ख i)'कुटज चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वासों के समान धधकती भू में भी हरा–भरा बना रहता है। ii) यह कठोर पत्थरों के बीच रुके अज्ञात जल स्रोत से अपने लिए जबर्दस्ती रस खींच लाता है और सरस बना रहता है iii) कुटज घोषणा करता है कि यदि जीना चाहते हो तो मेरी तरह से कठोर पाषाण को भेद कर पाताल की छाती को चीर कर अपना भोग्य संग्रह करो।'	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
		(ग)		ग i)वह बड़ी बहुरिया के संवाद को सुनाने की हिम्मत जुटा नहीं पाया। उसे लगा कि यह तो उसके गांव का अपमान है कि वह अपनी लक्ष्मी को संभाल कर नहीं रख पाया। ii) उसे लगा कि बड़ी बहुरिया के चले जाने के बाद वह भी क्या गांव में रह पाएगा? वह यह सारी कथा बताकर बूढ़ी माता को भी व्यथित नहीं करना चाहता था। iii) वह मायके में बड़ी बहुरिया के भावी–जीवन की आशंका को भी भांप गया था कि उसे वहां भाई–भाभियों की नौकरी कैसे कर पाएगी? इन सब कारणों से वह बड़ी बहुरिया का संवाद उसके मायके में नहीं सुना सका।	
			10 (क)	किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित, प्रत्येक के उत्तर में किन्हीं दो बिंदुओं के समावेश पर पूरे अंक दें। i) अराफात गांधी की भांति ही साम्राज्यवाद के विरोधी थे। ii) गांधी जी अराफात के फिलस्तीनी आंदोलन का समर्थन करते थे। उसी प्रकार अराफात भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय नेताओं का पूरा समर्थन करते थे। iii) अराफात अतिथि–सत्कार में बहुत अधिक विश्वास रखते थे। उन्होंने लेखक को सपत्नीक भोज के लिए आमंत्रित किया। उन्हें स्वयं बाहर लेने आए तथा स्वयं अपने हाथों चाय बना कर पिलाई। (किन्हीं दो का उल्लेख)	4+4 = 8 अंक
			(ख)	i) 'दूसरा देवदास' कहानी का शीर्षक पूरी तरह से उपयुक्त एवं सार्थक है। दूसरा देवदास (संभव) भी अपनी पारो के प्रति उतना ही आसक्त था जितना पहला अर्थात् शरतचंद्र के उपन्यास का पात्र देवदास। ii) इसके मन में भी अपनी पारो को देखने की ललक पहले देवदास जितनी ही थी। iii) वह अपना नाम 'संभव देवदास' बताकर इस शीर्षक को सार्थक बनाता है। iv) दोनों के हृदय में अनजाने ही प्रेम का स्फुटन हो जाना शीर्षक को उपयुक्तता और सार्थकता प्रदान करता है। (किन्हीं दो का उल्लेख)	
			(ग)	i) कुटज केवल जीता ही नहीं, शान से और स्वाभिमानपूर्वक जीता है। 'केवल जीने' से यह ध्वनित होता है कि वह विवशतापूर्ण जीवन जी रहा है। वास्तविकता इसके विपरीत है। वह अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बलबूत पर जीता है। ii) अनेक व्यक्ति किसी न किसी विवशतावश जी रहे हैं। उनमें जिजीविषा शक्ति का अभाव है। उनमें संघर्ष का अभाव है। वे अपना प्राप्य वसूल करना नहीं जानते। कुटज ऐसा नहीं है। iii) उनके जीवन में उल्लास नहीं है। वे हारे मन से जी रहे हैं। उन्हें इस भावना को त्यागना होगा। (किन्हीं दो का उल्लेख)	

प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
29/1/1	29/1/2	29/1/3		
12	11	12	किसी एक कवि / लेखक की जीवनी अपेक्षित अंक विभाजन : संक्षिप्त जीवन परिचय – 2 दो रचनाओं का परिचय – 2 साहित्य की भाषा शैली की दो विशेषताएं – 2 केशवदास : रामभक्ति शाखा के प्रमुख रीतिकालीन कवि, जन्म – 1555 ई., बेतवा नदी के तट पर स्थित ओरछा नगर। आश्रयदाता – ओरछापति महाराज इंद्रजीत सिंह, वीरसिंह देव का भी आश्रय प्राप्त। संगीत, साहित्य, धर्मशास्त्र, राजनीति, ज्योतिष, वैद्यक सभी विषयों के अध्येता। रचनाएं : रसिक प्रिया, कविप्रिया, रामचंद्र चंद्रिका, रतनबावनी आदि। काव्यगत विशेषताएं : कव्य–भाषा ब्रज, बुंदेली के शब्दों का प्रयोग, संस्कृत प्रभाव / रचनाओं में तीन रूप – आचार्य, महाकवि और इतिहासकार। व्यवस्थित और सर्वांगपूर्ण रीतिग्रंथ प्रस्तुत किए। मृत्यु – सन् 1617 में। निराला : जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में 1897। शिक्षा मैट्रिक, अल्पायु में विवाह। पिताजी की मृत्यु–उपरांत आर्थिक संकट–संघर्ष, पत्नी व पुत्री सरोज की अकाल मृत्यु। जीवन दिशा बदल गई तो रामकृष्ण मिशन, अद्वैत आश्रम, बैलूर मठ चले गए। गंभीर दार्शनिक, आत्माभिमानी एवं मानवतावादी थे। दीन–दुखियों और असहायों के सहायक 15 अक्तूबर 1961 ई. में स्वर्ग सिधार गए। रचनाएं – परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, चमार, अप्सरा, अलका, लिली, सखी, चतुरी। काव्यगत विशेषताएं : बहुमुखो प्रतिभा, काव्य में अदम्य पौरुष भी, श्रृंगार भी दार्शनिकता, संवेदना, जागरण, उन्माद। कहीं छायावादी, कहीं रहस्यवादी, कहीं प्रगतिवादी।	6
अथवा 12	अथवा 11	अथवा 12	रामचंद्रशुक्ल : जन्म बस्ती जिले के 'अगोना' ग्राम के सन् 1884 ई. में। मिशन स्कूल से शिक्षा और उसी स्कूल से ड्राइंग मास्टर। 'हिंदी शब्द–सागर' के सहायक संपादक – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में। हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक, हिंदी विभाग के अध्यक्ष हुए। सन् 1941 में मृत्यु। रचनाएं : तुलसीदास, जायसी ग्रंथावली की भूमिका, सूरदास, चिंतामणि (तीन भाग) हिन्दी साहित्य का इतिहास और 'रस मीमांसा'। साहित्यिक विशेषताएं : आलोचक, इतिहासकार और साहित्य–चिंतक। विज्ञान, दर्शन, इतिहास, भाषा, विज्ञान, साहित्य और समाज से संबंधित मौलिक लेखन, संपादन और अनुवादों के बीच ज्ञान–सम्पन्न व्यक्तित्व उभरा। भाषा–शैली – प्रौढ़, सजीव प्रांजल एवं भावानुकूल। गद्य शैली विवेचनात्मक।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29 / 1 / 1	29 / 2 / 2	29 / 3 / 2		
				पं. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' : जन्म सन् 1883 ई. में पुरानी बस्ती, जयपुर में। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, गुजराती, पंजाबी, बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, लैटिन, फ्रेंच के ज्ञाता। 'प्राचीन इतिहास और पुरातत्व' उनका प्रिय विषय। प्रतिभा पत्रिका, नागरीप्रचारिणी पत्रिका में रचनाकार व्यक्तित्व उभरा। अध्यापन – कार्य किया। 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के प्राचार्य। गुलेरी जी का देहांत 1922 ई.। प्रसिद्ध कहानियां – 1. सुखमय जीवन 2. बुद्धू का कांटा 3. उसने कहा था	
13	13 (क)	14 (क)	13 (क)	(किन्हीं तीन के उत्तर अपेक्षित) • बदले की भावना से भैरों ने सूरदास की झोपड़ी में आग लगा दी और वहां उसे रुपयों की थैली मिल गई। • सूरदास सोचता है कि भिखारियों के लिए धन–संचय पाप के समान है, अपमान की बात है। दरिद्रता इतनी लज्जा की बात नहीं, जितना धन–संचय। इसलिए सूरदास अपनी आर्थिक हानि जगधर से छुपा रहा था।	3+3+3=9
	(ख)	(ख)	(ख)	• भूपसिंह पहाड़ों पर चढ़ने की कला में अत्यंत कुशल। • परिश्रमी – झरने का रुख बदलने और खेती को बढ़ाने में। • स्वाभिमानी – माही गांव के लोगों ने बकरी के बच्चे की बलि दी तो उन्होंने उनसे बात करना बंद कर दिया। • खुद्दारी – छोटे भाई के शहर जाने के प्रस्ताव को ठुकरा देता है। (कोई तीन विशेषताएं अपेक्षित)	
	(ग)	(ग)	(ग)	• धोती / कमीज में प्याज बांधना। • आम का पन्ना। • आम भून कर देह लेपना, नहाना। मुक्त उत्तर संभव। इसके पक्ष या विपक्ष में तर्क–सममत उत्तर स्वीकार्य।	
	(घ)	(घ)	(घ)	• पाश्चात्य दृष्टिकोण से अपनाई जा रही सभ्यता हमें उजाड़ देगी। – जाति और प्राकृतिक दोनों का विनाश! – पर्यावरणीय असंतुलन! – यूरोप–अमेरिका की खाऊ–उजाड़ जीवन पद्धति, संस्कृति, सभ्यता हमारी धरती को नष्ट करने पर तुली है। • सही अर्थों में हम उजड़ रहे हैं। – पर्यावरणीय सरोकारों ने आम जनता को जोड़ दिया है, सचेत किया है। (मुक्त उत्तर संभव। उपयुक्त उत्तर स्वीकार्य)	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
14	14			i) सूरदास अंधा है। एक झोंपड़ी थी, वह भी जल गई। जीवन भर की कमाई भी चोरी हो गई। ऐसी स्थिति में भी वह निराश नहीं हुआ। उसने अपना विश्वास बनाए रखा। ii) वह निराशा की अपेक्षा बार–बार प्रयास करने में विश्वास रखता है। iii) वह पुनर्निर्माण में विश्वास रखता है, प्रतिशोध में नहीं। iv) वह परोपकारी है। अपनी जमीन पर एक कुआँ व मंदिर बनवाने हेतु धन संचय करता है। v) परिस्थितियां उसे मर्माहत करती हैं, परन्तु वह फिर से पुनर्निर्माण का संकल्प लेकर कर्मक्षेत्र में अवतरित हो जाता है। vi) वह जीवन के घटनाक्रम को खेल मानकर संतोष करता है। खेल में रोना नहीं होता वह इस भावना से जीवन जीता है। vii) वह स्वाभिमानी, उदार, आदर्शवादी व्यक्ति है।	6 अंक
	अथवा	–	–	सैलानियों को पर्वतों की यात्रा भले ही आनंदित करे वास्तव में पहाड़ी जीवन अत्यंत कठिन होता है। i) आवागमन की कोई विशेष सुविधा नहीं होती। ii) दुरूह चढ़ाई के लिए घोड़ों का सहारा लेना पड़ता है। iii) मार्ग अत्यन्त संकरे व भयावह होते हैं। iv) चट्टानों के खिसकने से मार्ग कभी भी अवरुद्ध होने की संभावना रहती है। v) खेती के लिए, समतल भूमि का अभाव रहता है। vi) पानी की भी समस्या निरंतर रहती है। vii) पर्वतीय प्रदेशों का जीवन संघर्षमय,स्थानीय आपदा, कठिन एवं दुखद है।	
	–	13	–	यह कटु सत्य है कि विकास की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता है। यह खाऊ–उजाड़ सभ्यता पर्यावरण का विनाश कर रही है। यह विचारणीय विषय है – i) वनों की कटाई से पर्यावरण का असंतुलन बढ़ा है। ii) वनों की कमी से वर्षा का क्रम गड़बड़ा गया है। iii) वर्षा की कमी से अन्न–संकट मंडरा रहा है। iv) नदियों का अमृत तुल्य जल इस विकास के कारण अब पीने की छोड़िए छूने लायक भी नहीं रहा है। v) शुद्ध वायु, शुद्ध पानी व शुद्ध मिट्टी मिलना असंभव–सा हो गया है।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
				vi) जल, वायु, मिट्टी व ध्वनि–प्रदूषण के कारण नए–नए रोग उत्पन्न हो रहे हैं। vii) नई सभ्यता द्वारा उत्सर्जित कार्बनडाइआक्साईड गैस धरती के तापमान को बढ़ाकर विभिन्न विकृतियों को जन्म दे रही है जिससे ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है जो पर्यावरण के विनाश का उत्तरदायी है।	
		अथवा		i) भू–स्खलन के बाद भूप ने शैला से मिलकर फैले हुए मलबे का हटाया। ii) दोनों ने खेतों को ढलवां बनाया। iii) पहाड़ काट कर तथा झरने को मोड़कर पानी को अपने खेतों तक लाए। iv) उस समस्त भू–भाग को हरा–भरा बनाया। v) शैला को असमर्थ होने पर नीचे से दूसरी स्त्री को लाया तथा खेतों को सुधारा। vi) जहां जीना मुश्किल था उस पहाड़ी को उन दोनों ने अपनी मेहनत के बल पर रहने योग्य बनाया। vii) यह कहानी उन दोनों की हिम्मत और परिश्रम का उदाहरण है।	
			14	i) प्रस्तुत संदर्भ सूरदास अपनी सारी व्यवस्था को भुला कर नया जीवन जीने की तैयारी करता है। ii) लेखक की यह उक्ति 'खेल में रोते हो' उसके जीवन का आधार है। iii) उसके साथ घटी घटनाएं उसके मनोबल को तोड़ देती हैं परंतु सूरदास नौराश्य, ग्लानि, चिंता से निकाल कर एक स्फुर्ति का अनुभव करता है। iv) विजय एवं गर्व की तरंग में अपने दोनों हाथों से राख के ढेर को हवा में उड़ाने लगता है। v) सूरदास की मनोदशा उस जुझारू सिपाही जैसी है जो लड़ाई में हार जाने के बाद भी अपनी हिम्मत नहीं खोता और उस हार में भी अपनी जीत खोजता है। vi) वह स्वाभिमानी, आदर्शवादी तथा साहसिक मनोवृत्ति का परिचय देते हुए कहता है – 'वह भी सौ लाख बार अपनी झोंपड़ी बनाएगा'।	

प्रश्न सं.	प्रश्न पत्र गुच्छ सं.			उत्तर संकेत / मूल्य–बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
	29/1/1	29/1/2	29/1/3		
			14 अथवा	विस्कोहर की माटी में लेखक ने प्रकृति के सौन्दर्य को विभिन्न रूपों में अनुभव किया – i) भीषण गर्मी की मार से तपे जीव जगत को वर्षा का आगमन बहुत अच्छा लगता। कुत्ते, बकरी, मुर्गे आदि अपने–अपने स्वरों से तथा उछल–कूद के द्वारा प्रसन्नता प्रकट करते दिखाई पड़ते। ii) बरसात में दिन में ही सघन बादलों का घिरना, रात के अंधकार की गहन अनुभूति देता हुआ लगता। iii) आकाश से मोटी–मोटी बूंदों का तेजी से जमीन पर पड़ना, ऐसा लगता मानों दौड़ते हुए घोड़ों की टापें हों। iv) बादलों की गर्जन तथा वर्षा की फुहारों में लेखक को तबला, मृदंग और सितार के स्वर सुनाई पड़ते थे। v) विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के फूल प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाते हुए दृष्टिगोचर होते, जिनमें कोइयां अर्थात् कमल पुष्प का विशेष उल्लेख है। vi) पितृपक्ष में घरों के द्वारों पर हारसिंगार के फूलों का सौंदर्य भुलाने पर भी नहीं भूलता। vii) कच्चे आम, जामुन, कमलककड़ी, सिंघाड़े आदि के स्वाद आज भी लेखक को सुखद लगता है। viii) तालाबों में तैरती बत्तखों में लेखक को मां की ममता की अनुभूति होती है।	